ऐसी मौसी सब को मिले-1

“मैं अपनी मौसी के यहाँ रह कर पढ़ने लगा, वे बेऔलाद थी पर खूबसूरत जवान थी. एक बार सोते उनके उभरे चूचे देख मैं उत्तेजित हो गया, उत्तेजनावश मैंने उनका ब्लाउज खोला …”

Story By: (varindersingh)
Posted: Wednesday, April 22nd, 2015
Categories: चाची की चुदाई
Online version: ऐसी मौसी सब को मिले-1

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

ऐसी मौसी सब को मिले-1

मेरा नाम विजय है, 24 बरस का हूँ। शहर में मेरी मौसी रहती थी, मौसाजी की किरयाने की दुकान थी, थोड़ा बहुत होलसेल का काम भी था।
बाकी सब तो ठीक था पर मौसी के कोई औलाद नहीं थी, हम 4 भाई बहन थे, और मौसी हम सबसे बहुत प्यार करती थी। मैंने भी उन्हें हमेशा अपनी माँ जैसा ही समझा था।

बात थोड़ी पुरानी है, जब मैं 12वीं क्लास पास कर चुका था, माँ बाप चाहते थे कि मैं और पढ़ूँ तो उन्होंने मुझे शहर मौसी के पास भेजने का विचार किया। असली खुशी तो मुझे इस बात की थी कि शहर में रहूँगा, कॉलेज में पढ़ूँगा और शहर में तो सुना है के लड़कियाँ भी बहुत जल्दी पट जाती हैं।

मैं शहर आ गया और कॉलेज में एड्मिशन भी ले ली, पर 3-4 महीने बीत जाने पर भी कोई भी लड़की नहीं पटी, दोस्त तो बन गई पर साली गर्लफ्रेंड कोई नहीं बनी।
रोज़ सुबह जब सो कर उठता तो लण्ड फुल टाइट तना होता, मगर उसको लेने वाली कोई नहीं मिल रही थी, मूठ मारने का ना मुझे शौक था और ना ही आदत, तो लण्ड भी एकदम मूसल की तरह सीधा और दमदार था, बस इशारा करते ही तन जाता था।

ऐसे ही दिन बीतते गए पर कोई बात ना बनी।
एक दिन ऐसे ही दोपहर के वक़्त मुझे लेटे लेटे प्यास सी लगी तो मैं उठ कर दूसरे कमरे में गया जहाँ मौसी लेटी थी, क्योंकि फ्रिज उनके कमरे में रखा था।
मैंने पानी पीते पीते ध्यान दिया, मौसी शायद टीवी देखते देखते सो गई थी, सोते में उनकी साड़ी उनके सीने से हट गई थी जिस कारण उनके भारी स्तन काफी सारे उनके ब्लाउज़ से बाहर दिख रहे थे।
बड़े बड़े दो गोल स्तन और भरा भरा सा उनका पेट, मेरी तो आँखें फटी की फटी रह गई।

फिर मैंने सोचा, बदतमीज़ यह क्या देख रहा है, जिस औरत की तू इतनी इज्ज़त करता है उसका नंगापन देख रहा है ?
मैं दूसरे कमरे में चला गया और बेड पे लेट गया। थोड़ी देर बाद मुझे भी नींद आ गई।

थोड़ी देर बाद मुझे मौसी ने जगाया- उठो विजय चाय पी लो, आज बहुत सो रहे हो ?

मैं आँखें मलता हुआ उठा तो देखा- ओ तेरे दी…

लण्ड ने तो तन कर पायजामे का तम्बू बना दिया था… क्या मौसी ने भी देखा होगा ? मुझे बड़ी शर्म आई, पर चलो। मौसी की आदत थी को वो अक्सर दोपहर को सो जाया करती थी।
धीरे धीरे मुझे इस बात की आदत सी पड़ने लगी के जब भी मौसी सो रही होती, मैं किसी ना किसी बहाने से जा कर उसके अंग प्रत्यंग को निहार आता। कभी मन में विचार आता नहीं ये तो मेरी माँ जैसी है तो कभी मन में बैठा शैतान कहता, माँ जैसी है पर माँ तो नहीं, उसके स्तन कितने बड़े हैं, कितने गोल और कितने गोरे, अगर उनसे खेलने का मौका मिल जाए तो, या चूसने का, वाह क्या मज़ा आए, पर मैं हमेशा अपने मन पे क़ाबू पा लेता। मगर ये भी हो रहा था के मैं इसी फिराक में रहता के कब और कैसे मौसी के स्तनो के दर्शन कर सकूँ। कभी कभी रात को जब मौसाजी मौसी के साथ सेक्स करते तो मौसी की सिसकारियाँ और कराहटें मैं भी सुनता, मेरा लण्ड तन जाता पर क्या करता।

कुछ दिनों बाद ऐसे ही एक दिन मैं अपने बिस्तर पे लेटा था और इंतज़ार कर रहा था कि कब मौसी सो जाए और मैं उसके उरोजों के दर्शन कर सकूँ।

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !
जब मैंने थोड़ी देर बाद देखा तो मौसी के हल्के हल्के खर्राटों की आवाज़ मैंने सुनी, मतलब मौसी सो गई थी, मैं उठ कर जाने लगा तो मन में से आवाज़ आई ‘रुक जा विजय, ऐसा

मत कर !'
पर दूसरे ही क्षण ये आवाज़ आई 'ऐसे गोल गोल स्तन देखने का मौका रोज़ रोज़ नहीं मिलता, चल चलके देखते हैं।'
मैं उठा और सीधा जा के मौसी के बेड पे उनकी बगल में बैठ गया।
मौसी के सांस लेने से उनके बड़े बड़े स्तन ऊपर नीचे हो रहे थे, मैंने देखा के आसमानी रंग के ब्लाउज़ ने नीचे आज मौसी ने ब्रा नहीं पहनी थी तो ब्लाउज़ में से उनके चूचुक भी थोड़ा बाहर उभरे हुए दिख रहे थे।
जितना मैं मौसी के स्तन देख रहा था मेरी हालत उतनी ही खराब होती जा रही थी। फिर न जाने क्या सोच कर मैंने, अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए और बड़े ही धीरे से मौसी के ब्लाउज़ का एक हुक खोल दिया। मैंने देखा मौसी उसी तरह बेफिक्र सो रही थी। मैंने फिर हिम्मत की और दूसरा हुक भी खोल दिया। अब मौसी की छाती थोड़ी और खुल कर दिखने लगी।

ऐसे ही करते करते मैंने उनकी ब्लाउज़ के 4 हुक खोल दिये। अब सिर्फ नीचे के 2 हुक बचे थे, अगर मैं ये भी खोल दूँ मौसी ऊपर से पूरी नंगी हो जाएगी मेरे सामने। मगर मन ने मना कर दिया और मैं उठ कर फिर अपने कमरे में आ गया।

मगर जितनी छातियाँ मैं मौसी की देख आया था, वो दृश्य बार बार मेरी आखों के सामने घूम रहा था। मेरा मन फिर से बेईमान हो गया और मैं फिर जा कर मौसी के पास बैठ गया। मैंने फिर से हिम्मत की और मौसी के ब्लाउज़ का पांचवा हुक भी खोल दिया और फिर उसके बाद छठा हुक भी खोल दिया।

अब मौसी मेरे सामने नंगी थी, सिर्फ उनके ब्लाउज़ के दोनों पल्ले हटाने थे। मैंने बड़े आराम से दोनों पल्ले उठा कर साइड पे कर दिये।
'वाह, सृष्टि की सबसे सुंदर चीज़ मेरे सामने थी।' आज मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार किसी स्त्री के स्तनों को बिल्कुल नंगा देखा था और वो भी इतनी करीब से।

मैं उन स्तनों को चूसना और सहलाना चाहता था, पर डर लग रहा था के मौसी न जग जाए।
खैर मैंने हिम्मत करके मौसी बाएँ स्तन पर अपना काँपता हुआ हाथ रखा। मौसी वैसे ही सो रही थी, थोड़ा आश्वस्त होने पर मैं स्तन पर अपने हाथ से पकड़ बनाई। मौसी का निप्पल मेरी हथेली के बीच में लग रहा था। जब मैंने एक दो बार हल्के से दबा के देखा और मौसी नहीं जगी तो मैंने अपने दोनों हाथों में मौसी के दोनों स्तन पकड़ लिये और दबाये।

इस बार मौसी थोड़ी कसमसाई, शायद मैंने थोड़ा ज़्यादा दबा दिया। मगर अब दबाने से बात नहीं बन रही थी, मैं तो चूसना चाहता था। जब मैंने मौसी का निप्पल अपने मुँह में लिया तो मौसी हिल पड़ी और मैं भाग कर अपने कमरे में जा के बेड पे लेट गया।
डर के मारे मेरी गाँड फटी पड़ी थी, अगर मौसी को पता चल गया, अगर वो गुस्सा कर गई, अगर उन्होंने मौसाजी को और मेरे घर पे बता दिया तो ?

मैं बहुत घबरा गया और आँखें बंद करके ऐसे लेट गया जैसे सो रहा हूँ। थोड़ी देर बाद मुझे नींद आ गई। फिर जब जागा तो मौसी मेरे लिए चाय बना कर मुझे जगा रही थी, मैं बहुत शर्मिंदा था और मौसी से नज़र नहीं मिला पा रहा था। मैंने उनके चेहरे की तरफ भी नहीं देखा।

अगले दिन दोपहर को देखा कि मौसी तो पंजाबी सूट पहने हुये थी। मतलब अब मैं उनका ब्लाउज़ नहीं खोल सकता था, तो क्या मौसी को सब पता चल गया, मुझे बहुत ग्लानि हुई।

अगले 3-4 रोज़ मैंने देखा कि मौसी हमेशा पंजाबी सूट ही पहनती थी और इसी वजह से मैं कुछ नहीं देख पाता था। हाँ कभी कभी उनके झुकने से उनकी वक्ष रेखा ज़रूर दिख जाती थी पर मैं उनके साथ उस दिन की वारदात भूल नहीं पा रहा था।

रात को मौसा जी ने मौसी के साथ सेक्स किया। दोनों की खुसुर पुसुर और कराहटें मैं सुन रहा था। मेरा भी लण्ड पूरा तना हुआ था, पर मैं क्या कर सकता था।

अगले दिन सुबह उठा और तैयार हो कर कॉलेज चला गया।
कहानी जारी रहेगी।
alberto62lopez@yahoo.in

Other stories you may be interested in

मेरी मामी की तड़पती जवानी-2

रिश्तों में चुदाई की मेरी कहानी के पहले भाग मेरी मामी की तड़पती जवानी-1 में आपने अब तक पढ़ा कि दूर के रिश्ते में मेरे मामा मामी आये हुए थे. मैं और मामी एक दूसरे की तरफ वासनात्मक दृष्टि से […]
Full Story >>>

हुस्न की जलन बनी चूत की अगन-3

मेरा उत्तर सुनकर लता भाभी एकदम रोमांचित हो गई और मुझसे लिपट गई ; कहने लगी- देवर जी, यह मेरी खुशकिस्मती है कि आपका लंड फर्स्ट टाइम मेरी चूत में जाएगा और आप पहली बार मुझे चोदोगे. मैं लता भाभी को […]
Full Story >>>

बहन की नंगी जांघें देखकर चोद दिया

मेरा नाम रोहन है. मैं बरेली का रहने वाला हूँ और अपने घर से दूर एक कमरा लेकर अपनी ग्रेजुएशन पूरी कर रहा हूँ. बात कुछ ज्यादा पुरानी नहीं है. हमारे कॉलेज में एक लड़की पढ़ती थी. उसका नाम मैं […]
Full Story >>>

चुदासी चाची के मोटे चूचे और गांड

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा प्रणाम ! मैं इस साइट का नियमित पाठक हूँ. यह मेरी दूसरी कहानी है. यह कहानी मेरी और मेरी चाची की है. मैं आपको बताऊंगा कि मैंने अपने चाची को किस तरह चोदा. कहानी शुरू […]
Full Story >>>

दौड़ पड़ी मेरी बीवी की चुदाई एक्सप्रेस-2

मेरी चुदैल चुदक्कड़ बीवी की चुदाई की कहानी के प्रथम भाग दौड़ पड़ी मेरी बीवी की चुदाई एक्सप्रेस-1 में आपने पढ़ा कि मेरी बीवी ने अनायास ही हमारे पड़ोसी का लम्बा बड़ा लंड देख लिया था और उसकी चूत उस […]
Full Story >>>